६४: उत्पादन विधि -२

दिनांक -२७-०२-२०१२

उत्पादन विधि के बारे में पिछले लेख में यह स्पष्ट किया है कि आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन ये छः मुद्दे पर उत्पादन होगा | इसी के साथ कृषि तथा गोपालन रहेगा | इस क्रम में यह देखा गया है कि मानव जब समझदारी को उपार्जित कर लेता है अर्थात मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना में जीना सीख लेता है तभी समृद्धि का कल्पना, अनुभव, प्रमाण होता है अन्यथा सुविधा, संग्रह में आदमी खप जाता है | इसे भली प्रकार देखा गया है, निर्णय लिया गया है, अध्ययन के लिये प्रस्तुत किया गया है | आहार, आवास, अलंकार द्रव्य श्रमपूर्वक उत्पादन से सम्पन्न होता है | इस क्रम में मानव समाधानित रहना पहले, इसके बाद श्रमपूर्वक उत्पादन कर समृद्धि का अनुभव करना बनता है | समाधान के बिना समृद्धि का अनुभव सम्भव है ही नहीं | समाधान के पहले समृद्धि के नाम से जो कुछ भी होता है, वो सब प्रियाप्रिय, हिताहित, लाभालाभ के सीमा में ही रह जाता है | अथवा आदर्श बनकर रह जाता है | आदर्श होना न होना भी एक प्रिय सोच ही है |

इसका गवाही है सुविधा, संग्रह के आधार पर बहुत से लोग सभी देशों में प्रयोग किये, सफल नहीं हो पाये | सफल होने का एक ही विधि है जिसे अनुभव व प्रमाणित किया जा चुका है | समाधानपूर्वक ही समृद्धि का अनुभव होता है | मानव जात जितना भी प्रयोग किये हैं भौतिकवाद के आधार पर, सब जीव चेतना विधि से सम्पन्न हुआ है | इसका गवाही है समुदाय चेतना विधि से किया गया कार्यक्रम, व्यक्तिवादी चेतना से किया गया कार्यक्रम | यह दोनों संघर्ष एवं युद्ध से अछूता नहीं है | अभी भी कुछ देश विरक्ति पाना चाह रहे हैं | दूसरा स्थिति में कुछ देश युद्ध को बनाये रखते हैं | इस क्रम में भी युद्ध और युद्ध प्रक्रिया, कार्यक्रम विश्व स्वराज्य परिवार में समाहित हो जायेगा | शनैः शनैः मानव परम्परा में युद्ध विचार का विरक्ति होना सहज है |

उत्पादन कार्य हस्त कला से चलकर बड़े उद्योग तक होना देखा गया है | कृषि, गोपालन हर अवस्था के मानव के साथ रहेगा- हस्त कला के साथ भी, ग्राम शिल्प के साथ भी, कुटीर उद्योग के साथ भी, ग्रामोद्योग के साथ भी, लघु उद्योग के साथ भी, बड़े उद्योग के साथ भी | हर व्यक्ति के साथ हस्त कला, हर परिवार के साथ कुटीर उद्योग, ग्राम में ग्रामोद्योग के साथ जीना होता है | लघु उद्योग, ग्राम उद्योग, बड़े उद्योग, सब का सब एक परिवार की हैसियत से काम करने, विधिवत वितरित होने की व्यवस्था रहेगी | विधिवत वितरण का तात्पर्य, हर व्यक्ति अपने श्रम का मूल्यांकन स्वयं करेगा, साथ में कोई दूसरे व्यवस्थापक पहले वाले का मूल्यांकन करेगा | समझदारी के साथ सहमत होने पर व्यवस्था माना जायेगा | समझदारी मूल रूप में मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में पहचाना गया है | इस क्रम में मानव अपने स्वत्व, अधिकार को विधिवत प्रस्तुत कर पाता है |

समझदारी ही मानने का अधिकार है अर्थात मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना ही हर मान्यता का आधार है | दूसरे विधि से जानने के बाद मानने में ही स्थिरता है | जीव चेतना विधि से माना हुआ मान्यता क्षणिक होना पाया जाता है | बल,

बारूद के साथ मान्यताएं विवशता के रूप में होना देखा गया है | विवशताएं व्यवस्था नहीं हो पाता | स्वभाव विधि से कर्तव्य एवं दायित्व के रूप में व्यवस्था स्वीकार होता है | दायित्व समझदारी का प्रकाशन ही है, जो विकसित चेतना में मूल रूप से प्रकट होता है | कर्तव्य का स्वरूप सामान्याकाँक्षा, महत्वाकांक्षा के रूप में किया गया उत्पादन के रूप में होता है | सामान्याकाँक्षा का मतलब सभी समझदार व्यक्ति परिवार के रूप में पहचाना जाता है |

कर्तव्य को महत्वाकाँक्षा, सामान्याकांक्षा सम्बंधी वस्तुओं को उपार्जित, उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशील के अर्थ में पहचाना जाता है | यही मूल्यांकन का आधार रहता है | इसी क्रम में बड़े उद्योग अर्थात सर्वोपरि बड़े उद्योग प्रधान राज्य परिवार सभा में व्यवस्थित रहेगा | बड़े उद्योग मंडल समूह, मुख्य राज्य परिवार सभा तक समाहित रहेगा | छोटे उद्योग क्षेत्र सभा, ग्राम मोहल्ला परिवार समूह सभा में समाहित रहेगा | ग्रामोद्योग, ग्राम मोहल्ला सभा में समाहित रहेगा | हस्त कला, ग्राम शिल्प हर परिवार सभा में समाहित रहेगा | इस प्रकार सभी परिवार में कर्तव्य दायित्व समाहित रहेगा | मुख्य बात इसमें यही है, समझ के करना | समझदारी, ज्ञान है | ज्ञान का शुरुआत साक्षात्कार से है | साक्षात्कार, न्याय धर्म सत्य का ही होता है | साक्षात्कार से ही समझदारी का रास्ता बनता है | समझ पूर्वक अभाव का अभाव होना ही समृद्धि का अनुभव है | इसे प्रमाणित करना कर्माभ्यास एवं उत्पादन पूर्वक होना होता है | उत्पादन में भौतिक विज्ञान की प्रयुक्ति होती है | इस ढंग से विवेक सम्मत विज्ञान की बात आती है | यह विकसित चेतना सहज अवधारणा पूर्वक ही सफल है | इसके पूर्व अनुसरण, तर्क एवं कल्पना ही है | वो भी उपकारी है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

ए. नागराज